आत्मानं विद्धि

अंक-९, फरवरी २०२१ माघ मास, विक्रम संवत् २०७७

मानव भारती- विद्यालयस्य प्रयासः

ज्योतिर्गमय

ऋतूनां कुसुमाकरः "वसंतोत्सवः"

ऋतूनां कुसुमाकर: "वसंतोत्सव:"

सम्पादकीयम्

मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः।
मैं महीनों में मार्गशीर्ष और ऋतुओं में वसन्त हूं। - श्रीमद्भगवद् गीता

• डॉ.अनन्तमणि त्रिवेदी

भारतीयवर्षानुसारं द्वादश-मासा: षड् ऋतवश्च भवन्ति।
चैत्र:, वैशाख:,ज्येष्ठ:,आषाढ:,श्रावण:, भाद्रपद:,आश्विन:, कार्तिक:,मार्गशीर्ष:,पौष:,माघ:, फाल्गुन: मासा: भवन्ति।अथ च वसन्त:,ग्रीष्म:,वर्षा,शरद्,हेमन्त:,शिशिर:षड् ऋतवश्च भवन्ति।

वसन्त- ऋतु: सर्वेषां ऋतूनां श्रेष्ठतम: अस्ति। अतएव अयम् ऋतुराज: कथ्यते।वसंतस्य आगमनात् पूर्वं सर्वेषां वृक्षाणां सर्वासां लतानां च जीर्णानि पत्राणि वायुवेगाघातेन पतन्ति। तदनन्तरं नवलमृदुलपल्लवै: सर्वे वृक्षा:सर्वा:लताश्च शोभन्ते।
विविधेषु उपवनेषु काननेषु उद्यानेषु च नानाविधा:पादपा:वल्लर्य:लताश्च प्रफुल्लिता:शोभन्ते। हरित- पीतरक्तवर्णै:विविधै:कुसुमितै:कुसुमै:सकलानि काननानि विलसन्ति।सरससुमनानां सौरभसंयुक्तमधुरपरागपाननेन प्रमत्ता: मधुकरा: इतस्तत:भ्रमन्त: मनोहरं गुंजारं कुर्वन्ति।

वनानि कुसुमायन्ते प्रवाति मलयानिल:।
वसन्ते कोकिलानां च कूजनं शोभनं परम्।।

वसन्ते विशालानाम् आम्रवृक्षाणां पल्लवेषु मनोरमा: मञ्जर्य: अतीव शोभनीया: अवलोक्यन्ते। समुन्नतानां पादपानां शिखरेषु प्रसन्नमानसा:विहंगमा:मधुरस्वरै: कूजन्ति। शुकपिककपोतादय:खगा:सर्वासु दिक्षु:कलरवं कुर्वन्त: शोभन्ते। सर्वा दिश: रक्तवर्णा: दृश्यन्ते। लोहितं वातावरणं भवति। वसन्तस्य शोभा प्रायेण ग्रामेषु,वनेषु,पर्वतेषु च द्रष्टुं योग्या भवति। वसन्ते मयूरा:मयूर्यश्च प्रमुदिता:नृत्यन्ति। अस्मिन् समये अधिकं शैत्यं न भवति। सर्वे सुखेन निवसन्ति। सर्वत: प्रकृतेर्मनोरमा शोभा परमा दर्शनीया भवति। वसन्तस्य महिमा बहुभि:कविभि: वर्णित:। आगच्छन्तु वयं सर्वे मिलित्वा ऋतुराजस्य वसन्तस्य स्वागतं कुर्म:।
स्वागतम् ऋतुराज: वसंत:।

-डॉ.अनन्तमणि त्रिवेदी

ओ वसन्त !

ओ वसंत क्यों भूल गया तू अपना यह संसार।
याद तुझे करते प्रसून वन सघन माधवी- कुंज ,
तीखे कांटों में खिलते हिलते निष्कम्प निकुंज,
हिला- हिलाकर बांह आज भी करते विटप पुकार।
ओ वसंत क्यों भूल गया तू अपना यह संसार !
सिसक रही यह हवा याद बन नर्म चर्म के पास ,
कैसा है मधुमास अरे होता वह फिर यदि काश,
बार-बार तेरी चिंता मन में लाती पतझाड़ ।
ओ वसंत क्यों भूल गया तू अपना यह संसार !
ओ वसंत क्यों भूल गया तू अपना यह संसार !

-डॉ.रामविनय सिंह,एसोसिएट प्रोफेसर
(डीएवी पीजी कॉलेज) देहरादून, उत्तराखंड

निदेशक महोदय का संदेश

मानव भारती के नवोदित प्रतिभाओं को बधाई और शुभकामनाएं।

प्रिय विद्यार्थियों !
हम सभी ने लगातार आपकी ज्योतिर्गमय मासिक पत्रिका देखी और पढ़ी। पत्रिका के माध्यम से ज्ञात हुआ कि आप सभी पढ़ाई-लिखाई के साथ- साथ साहित्य सृजन में लगे हुए हैं, इस माध्यम से आप सभी का शैक्षिक चिंतन और लेखन कार्य में विकास होना स्वाभाविक है।आप सभी बच्चों का लगातार अलग- अलग विषयों पर लेखन कार्य, चित्रकारिता, कविता लेखन तथा अन्य विविध चिंतन आप सभी की अभिवृद्धि का शुभ लक्षण है। मैं आप सभी बच्चों के माध्यम से सम्मानित अभिभावकों के प्रति भी आभार प्रकट करता हूं क्योंकि उनके सहयोग के बिना यह साहसिक कार्य असम्भव है।

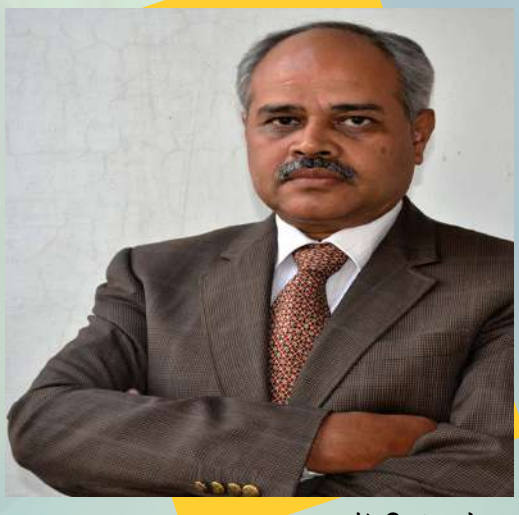

डॉ. हिमांशु शेखर

ज्योतिर्गमय के प्रायः सभी अंकों में जिन बच्चों ने बढ़ चढ़ कर सहभागिता की है वे विशेष बधाई के पात्र हैं--समीक्षा गहरवार कक्षा -आठवीं की छात्रा के द्वारा सुंदर- सुंदर चित्र बनाना हम सभी को बहुत अच्छा लग रहा है।इस क्षेत्र में उसे और परिश्रम करने की कोशिश करनी चाहिए। वहीं अंजलि रावत-११वीं, आदित्य मिश्रा-९वीं, प्राची रावत कक्षा-आठवीं, अंजलि नेगी कक्षा-आठवीं,प्रखर पुरोहित कक्षा-आठवीं, प्रांजल गुप्ता कक्षा-आठवीं, तनीशा सिंह कक्षा -आठवीं, अवन्तिका भंडारी कक्षा- सातवीं,अविषेक पटवाल कक्षा-सातवीं, हिमांशी वर्मा कक्षा- सातवीं,आलोक शेखर भट्ट कक्षा-षष्ठम्, पूजा पंवार कक्षा-षष्ठम्, शौर्य भट्ट कक्षा-षष्ठम्,अवनी सिंह कक्षा-षष्ठम्, कलिका त्रिवेदी कक्षा- पंचम, अंशिका मिश्रा, कक्षा- चतुर्थ के साथ बहुत संख्या में अभिभावकों ने भी पत्रिका में अपनी सहभागिता की है। मैं आप सभी को धन्यवाद के साथ इस उपलब्धि के लिए बधाई देता हूं।

पत्रिका के यशस्वी संपादक और हमारे अध्यापक डॉ.अनन्तमणि त्रिवेदी के प्रति भी मैं विशेष आभार प्रकट करना चाहूंगा जिनकी इच्छा शक्ति ने इस वैश्विक कोरोना काल में पत्रिका का सम्पादन कार्य प्रारंभ किया है।

मैं अपेक्षा करता हूं कि ज्योतिर्गमय मासिक पत्रिका के माध्यम से आप सभी बच्चे नए-नए विषयों पर लेखन अभ्यास करें।आप कविताएं लिखें, अनुच्छेद लेखन करें, निबंध लिखें, संवाद लिखें , नैतिक शिक्षा के श्लोक लिखें या फिर चित्र बनाएं परन्तु अवश्य ही लिखें। इससे आपकी गुणवत्ता बढ़ेगी और आप पढ़ाई-लिखाई में निरन्तर आगे बढ़ते रहेंगे। यही हमारा प्रयास भी रहता है।एक बार पुनः आप सभी के प्रति मैं आभार प्रकट करता हुआ आप सभी को इस मासिक पत्रिका ज्योतिर्गमय केलिए बधाई देता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

- डॉ. हिमांशु शेखर

बसंत ऋतु की विशेषताएं

भारत को अनेक ऋतुओं का देश माना जाता है।भारत में सर्दी-गर्मी, बरसात-पतझड़, वसंत-ग्रीष्म आदि छ: ऋतुएं आती-जाती रहती हैं।साल में आने वाली बसंत ऋतु सबकी प्रिय होती है।वसंत ऋतु के आने पर पूरा प्राणी जगत हर्ष और उल्लास से झूम उठता है।बसंत ऋतुओं का राजा होती है इसी वजह से इसे ऋतुराज बसंत के नाम से जाना जाता है।भारत की प्रसिद्धि का कारण उसकी प्राकृतिक शोभा होती है।लोग अपने आपको धन्य मानते हैं जो इस पृथ्वी पर रहते हैं।ये ऋतुएं एक-एक करके आती हैं और भारत माता का श्रृंगार करती है और चली जाती हैं।सभी ऋतुओं कि अपनी-अपनी शोभा होती है।लेकिन बसंत ऋतु की शोभा सबसे निराली होती है।बसंत ऋतु का ऋतुओं में सर्वश्रेष्ठ स्थान होता है इसी वजह से यह ऋतुओं की राजा मानी जाती है।बसंत के समय में ऋतु बहुत सुहावनी होती है।सर्दी खत्म और गर्मी शुरू होने वाली होती है।इस समय में न ही तो ज्यादा सर्दी होती है और न ज्यादा गर्मी होती है।प्रत्येक व्यक्ति बाहर घूमने का इच्छुक होता है।यह इस मीठी ऋतु की विशेषता होती है।सब जीव-जंतुओं और पेड़-पौधों में नव जीवन का संचार हो जाता है। वृक्षों के नए-नए पत्ते लग जाते हैं।फूलों का सौंदर्य और हरियाली की छटा मन को भा जाती हैं।आमों के पेड़ों पर बौर आने लगता है और कोयल भी मीठी आवाज में कुहू - कुहू करने लगती हैं।इस सुगंधित वातावरण में सैर करने से बहुत सी बीमारियां दूर हो जाती है।ठंडी-ठंडी हवा चलती रहती है जिससे मनुष्य की उम्र और बल में वृद्धि होती है। बसंत ऋतु पतझड़ और शिशिर के बाद आती है।देखा जाए तो बसंत फाल्गुन मास से ही शुरू हो जाती है। इसके वास्तविक महीने चैत्र और बैसाख होते हैं। 15 फरवरी से लेकर 15 अप्रैल तक का समय बसंत ऋतु का ही होता है। बसंत ऋतु में मौसम बहुत सुहावना होता है। प्रकृति में चारों ओर बसंत का प्रभाव दिखाई देने लगता है।बसंत के आगमन पर नई फसलें पकने लगती हैं। सरसों के पीले पीले फूल खिल-खिला कर खुशी व्यक्त करते हैं। सरोवरों में कमल के फूल खिल कर इस तरह पानी को छिपा लेते हैं जैसे मनुष्यों को संकेत देते हैं कि अपने मन को खोल कर हसों और दुखों को मन में समेट लो। आसमान में पक्षी किलकारियां मारकर बसंत का स्वागत करते हैं। प्राणी जगत में इस ऋतु के आने से उल्लास और उमंग का संचार होता है। पशु-पक्षी जोश , उत्साह और उल्लास से भर जाते हैं। कोयल अपने मधुर स्वर से गीत गाती है जो पूरी अमराईयों में गूंजता है। मनुष्य जाती उमंग से भरकर नाचने लगती है।किसान का मन अपनी फसल को देखकर खुशी से भर जाता है। कवि और कलाकार इस ऋतु से प्रभावित होकर नई कविताएं बनाते हैं। इस ऋतु का सबसे अच्छा प्रभाव मनुष्य के स्वास्थ्य पर पड़ता है। शरीर में नये रक्त का संचार होता है और स्वास्थ्य में उन्नति होती है। बसंत ऋतु के आने से दिशाएं साफ हो जाती हैं। चारों ओर प्रसन्नता से जड़ में भी चेतना आ जाती है। सूर्य भी अधिक तीव्र नहीं होता है। दिन रात एक जैसे होते हैं। बसंत ऋतु में हवा दक्षिण से उत्तर की तरफ बेहती है।दक्षिण से आने वाली हवा शीतल, मंद और मतवाली होती है।बसंत ऋतु में बसंत पंचमी के दिन ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती का जन्म हुआ था। इस दिन सरस्वती पूजन भी किया जाता है।हमें इस ऋतु में अपना स्वास्थ्य बनाना चाहिए । सुबह-सुबह उठकर घूमने जाना चाहिए और प्रकर्ती के सौन्दर्य का आनंद लेना चाहिए । वसंत ऋतु ईश्वर का एक वरदान है और हमें इस अवसर का पूरा लाभ उठाना चाहिए ।

समीक्षा गहरवार, कक्षा- 8 बी

हर्ष का समय है वसंत

वसंत पर आने के बदलाव..वसंत मौसम सर्दियों और गर्मियों के बीच मै आता हैं। यह शुरुआत है सर्दियों के मौसम के अंत के निशान इसके अलावा वसंत का अंत गर्मी के मौसम की शुरुआत का संकेत देता है।इसके अलावा जब यह उत्तरी गोलार्ध में वसंत होता यह दक्षिणी में शरद ऋतु है और इसके विपरीत। वसंत के मौसम के दौरान भी दिन और रात शायद बारह घंटे होते हैं। वसंत यह है निश्चित रूप से हर्ष का समय हैं। सबसे उल्लेखनीय और कई संस्कृतियों वसंत समारोह अधिकारों और त्योहारों के साथ होते ।

- अंजलि नेगी,कक्षा 8 ब

प्राकृतिक घटनाएं

पृथ्वी की धुरी सूर्य के सापेक्ष अपना झुकाव जल्दी वसंत ऋतु में बढ़ा देती है। प्रासंगिक गोलार्ध के लिए दिन की रोशनी की लंबाई भी बढ़ जाती है। इसके अलावा गोलार्ध गर्म हो जाता है जिसके परिणामस्वरूप नए ग्रह वसंत के सामने आते हैं। इसलिए इस मौसम को वसंत कहा जाता है। एक और महत्वपूर्ण घटना बर्फ का पिघलना है। फ्रॉस्ट भी कम मिलता है।वसंत जोड़ने के रूप में एक कहता है कि कई फूल पौधे खिलते हैं। उत्तरी गोलार्ध के कुछ क्षेत्रों में फरवरी में वसंत आता है। इसके अलावा समशीतोष्ण क्षेत्रों में एक शुष्क वसंत होता है जो फूल लाता है। छिड़काव निश्चित रूप से गर्मी का परिणाम है। इसके अलावा यह गर्मी सूर्य के अस्थिर मौसम के सापेक्ष पृथ्वी के अक्ष के परिवर्तन के कारण भी हो सकती है।

अस्थिर मौसम वसंत में भी हो सकता है यह तब होता है जब गर्म हवा कम अक्षांशों से आक्रमण करती है जबकि ठंडी हवा ध्रुवीय क्षेत्रों से धकेलती है। वसंत में बाढ़ पहाड़ी क्षेत्रों में आम है। इसकी वजह है बर्फ का पिघलना और गर्म बारिश से इसकी अवधि। हाल के वर्षों में वसंत घटना जिसे सीज़न चिप के रूप में जाना जाता है। अधिकांश उत्तर योग्य वसंत के सीज़न चिप संकेत करते हैं जो अब पहले की अपेक्षा घटित हो रहे हैं।यह प्रवृत्ति दुनिया के कई क्षेत्रों में प्रचलित है। - अंजलि नेगी,कक्षा 8 ब

प्राकृतिक बदलाव का मौसम वसंत

प्रांजल गुप्ता

वसंतोत्सव भारत में बड़े उत्साह से मनाया जाता है, इसे सरस्वती देवी जयंती के रूप में भी पूजा जाता है । बड़े पैमाने पर पूरे देश में सरस्वती पूजा अर्चना एवं दान का आयोजन होता है। यह दिन संगीत एवं विद्या को समर्पित है। मां सरस्वती सुर एवं विद्या की देवी हैं।

यह दिवस हिंदी पंचांग के अनुसार माघ महीने की पंचमी तिथि को मनाया जाता हैं, इस दिन से वसंत ऋतु शुरू होती है। प्राकृतिक रूप में भी बदलाव होता है, इस दिन से पतझड़ का मौसम खत्म होकर हरियाली का प्रारम्भ होता है। वसंत पंचमी माघ के महीने में आती हैं। इस दिन वसंत ऋतु का प्रारंभ होता हैं ,वंसत को ऋतुराज माना जाता है। यह पूरा माह बहुत शांत एवम संतुलित होता है, इन दिनों मुख्य पाँच तत्व (जल, वायु, आकाश, अग्नि एवम धरती) संतुलित अवस्था में होते हैं और इनका ऐसा व्यवहार प्रकृति को सुंदर एवम मन मोहक बनाता है।अर्थात इन दिनों ना बारिश होती है, ना बहुत ठंडक और ना ही गर्मी का मौसम होता है, इसलिए इसे सुहानी ऋतु माना जाता है।

वसंत में सभी जगह हरियाली का दृश्य दिखाई पड़ता हैं । पतझड़ खत्म होते ही पेड़ों पर नयी शाखायें जन्म लेती हैं, जो प्राकृतिक सुन्दरता को और अधिक मनमोहक कर देती हैं।वसंत पंचमी को एक मौसमी त्यौहार के रूप में भिन्न- भिन्न प्रांतीय मान्यता के अनुसार मनाया जाता है। कई पौराणिक कथाओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए भी इस त्यौहार को मनाया जाता है।

इस दिन सरस्वती माँ की प्रतिमा की पूजा की जाती है। उन्हें कमल पुष्प अर्पित किये जाते हैं।इस दिन वाद्य यंत्रो एवम पुस्तकों की भी पूजा की जाती है।इस दिन पीले वस्त्र पहने जाते हैं । खेत खलियानों में भी हरियाली का मौसम होता है, यह उत्सव किसानों के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है,इस समय खेतों में पीली सरसों लहराती है। किसान भाई भी फसल के आने की ख़ुशी में यह त्यौहार मनाते हैं।

गरबा नृत्य : - वसंत पंचमी पर गुजरात प्रान्त में गरबा करके माँ सरस्वती का पूजन किया जाता है,यह खासकर किसान भाई मनाते हैं। यह समय खेत खलियान के लिए बहुत उपयुक्त माना जाता है। पश्चिम बंगाल में भी इस उत्सव की धूम रहती है।यहाँ संगीत कला को बहुत अधिक पूजा जाता है।इसलिए वसंत पंचमी पर कई बड़े- बड़े आयोजन किये जाते है जिसमें भजन, नृत्य आदि होते हैं।

वसंत में पतंगबाजी : - यह प्रथा पंजाब प्रान्त की है, जिसे महाराणा रंजीत सिंह ने शुरू किया था। इस दिन बच्चे दिन भर रंग बिरंगी पतंगे उड़ाते हैं और कई स्थानों पर प्रतियोगिता के रूप में भी पतंग बाजी की जाती है।

वसंत मेला :- वसंत पर कई स्थानों पर मेला लगता हैं, पवित्र नदियों के तट, तीर्थ स्थानों एवम पवित्र स्थानों पर यह मेला लगता है,जहाँ देशभर के भक्तजन एकत्र होते हैं।इस तरह से वसंत ऋतु, सरस्वती पूजा, और वसंतोत्सव भारत का नव आनंद के साथ नूतन समय का सूचक होता है। -प्रांजल गुप्ता, कक्षा-आठवीं

वसन्त-पंचमी / सरस्वती- पूजा- दिवस:

सरस्वति! नमस्तुभ्यं
वरदे कामरूपिणि !
विद्यारम्भं करिष्यामि
सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥

सरस्वती अस्माकं महनीया देवता अस्ति। इयं सरस्वती-ज्ञानस्य देवता अस्ति। यथा शक्ते: देवता दुर्गा अस्ति,सम्पत्ते: देवता लक्ष्मी: अस्ति तथैव ज्ञानस्य देवता सरस्वती अस्ति। सरस्वती पूजा वसंत ऋतौ भवति अतएव एषा पूजा वसंत पंचमी, सरस्वती- पूजा- रूपेण ज्ञायते।सरस्वत्या: चत्वार: हस्ता: भवन्ति।तेषु एकस्मिन् हस्ते सा पुस्तकं धारयति,एकस्मिन् हस्ते मालां धारयति, एकस्मिन् हस्ते वीणां धारयति तथा एकेन हस्तेन वीणां वादयति। सरस्वत्या: वाहनं हंस: अस्ति। इयं पद्मासने तिष्ठति, इयं शुक्लानि वस्त्राणि धारयति।अस्या: मूर्ति: अतीव मनोहरा गम्भीरा शान्तिमयी प्रसन्नाकारा च भवति।सरस्वती ज्ञानस्य अधिष्ठात्री देवता अस्ति। इयं ज्ञानमयी अस्ति।

इयं ज्ञानं ददाति, अज्ञानं च दूरीकरोति। इयं विवेकं ददाति,अविवेकं च निवारयति। इयं विद्यां ददाति अविद्यां च नाशयति। अतएव सर्वे विद्योपासका: सरस्वतीं सेवन्ते,सरस्वतीं प्रणमन्ति,सरस्वतीं पूजयन्ति, सरस्वतीं स्तुवन्ति तथा सरस्वतीम् एव उपासते। सरस्वती एव विदुषां विद्यार्थिनां च महामान्या देवता अस्ति अतएव वसन्तपंचम्यां भभारतस्य सर्वेषु अपि विद्यालयेषु महता समारोहेण सरस्वत्या: पूजा भवति। यदा सरस्वती प्रसन्ना भवति तदा विद्यार्थिभ्य:विद्यां ददाति,विवेकं च ददाति। परं सरस्वती केन प्रकारेण प्रसन्ना भवति? परिश्रमेण, अभ्यासेन, सदाचारेण, विनयेन, गुरुसेवया च। अतः विद्या-अभिलाषिभि:परिश्रमेण पठनीयम्। पठितस्य पुनः पुनः अभ्यास: कर्त्तव्य:, सदाचारस्य पालनं कर्तव्यम्। गुरुजनां सेवा कर्त्तव्या तथा सर्वत्र विनयेन वर्तितव्यम्। इमानि एव सरस्वती पूजाया: प्रधानानि साधनानि सन्ति। जयतु सरस्वती, जयतु ऋतुराज: वसंत: ॥

-डॉ.अनन्तमणि त्रिवेदी

अंशिका मिश्रा, कक्षा- चतुर्थ

मनभावन बसन्त ऋतु

डॉ. बबिता गुप्ता

स्वागत है ऋतुराज तुम्हारा
हरीतिमा महके जग सारा ।
नव पल्लव, नव कलरव गूँजे
धरा प्रकृति के संग-संग झूमे।
चहुं दिश चिर यौवन का मेला
आयी बसन्त की मंगल बेला।
लो छटा कुहासा हटा धुन्ध तम सरपट भागे।
उड़ गई उदासी,कण-कण विहँसे जीवन जागे।
माँ ज्ञान दायिनी का पावन उत्सव है आया
जिनके उर में विद्या की चाहत ज्ञान पिपासा।
दृग खोल सजग सीखो पूरी होगी अभिलाषा।
आमों के वृक्षों पर बौरो की आहट आयी।
फूलों की महक बिखरती नभ लाली छायी।
हे नील कण्ठ पक्षी तेरा दर्शन सौभाग्य भरा है
यह बसन्त पँचमी शुभदिन अवसर से सजा हुआ है।

डॉ. बबिता गुप्ता,हिंदी अध्यापिका

कलिका त्रिवेदी, कक्षा पंचम

काक: कृष्ण: पिक: कृष्ण: को भेद: पिककाकयो: ।
वसन्त- समये प्राप्ते काक: काक: पिक: पिक: ॥

अर्थात् कौआ काला होता है, कोयल भी काली होती है, तो दोनों में क्या भेद है ? किन्तु वसन्त ऋतु में कौआ की आवाज और कोयल की मधुर कूक से दोनों की अलग-अलग पहचान हो जाती है। अतः हमें भी कोयल की तरह मधुर बोलना चाहिए।

वसंत ऋतु की मनमोहक शोभा

भारत को अनेक ऋतु का देश माना जाता है, भारत में सर्दी गर्मी, बसंत पतझड़, वसंत ग्रीष्म ,आदि छह ऋतु आती जाती रहती हैं |साल में एक बार आने वाली वसंत ऋतु सबकी प्रिय होती है |वसंत ऋतु ऋतु का राजा होता है इसे ऋतुराज भी कहा जाता है | इस ऋतु में चारों ओर हरियाली छाई होती है और हवा में एक अनोखी महक होती है|

अंजलि रावत, 11वीं

वसंत ऋतु आने से लोगों का तन मन बहुत खुश हो जाता है क्योंकि आसपास का वातावरण एवं मौसम बहुत सुहाना हो जाता है | वसंत ऋतु की कई विशेषताएं हैं -बसंत के समय में ऋतु बहुत सुहावनी होती है ,सर्दियां खत्म हो जाती है और गर्मी शुरू हो जाती है इस समय पर ना तो ज्यादा ठंड होती है और ना ज्यादा गर्मी होती है, प्रत्येक व्यक्ति बाहर घूमने का इच्छुक होता है ,इस ऋतु के आने से सभी जीव जंतुओं में नवजीवन का संचार हो जाता है,वृक्षों में नए नए पत्ते लग जाते हैं फूल उगने लग जाते हैं, आम के पेड़ों पर बौर आने लगते हैं, आदि |देखा जाए तो वसंत फाल्गुन मास से ही शुरू हो जाती है | इसके वास्तविक महीने चैत्र और वैशाख होते हैं |

15 फरवरी से लेकर 15 अप्रैल तक का समय वसंत ऋतु का ही होता है। वसंत ऋतु में मौसम बहुत सुहावना होता है प्रकृति में चारों और बसंत का प्रभाव दिखाई देने लगता है |माघ महीने का पांचवा दिन वसंत पंचमी के रूप में मनाया जाता है |इस दिन भगवान विष्णु व कामदेव की पूजा की जाती है |इस दिन को भगवती शारदा अर्थात मां सरस्वती के जन्मदिन के रूप में भी मनाया जाता है क्योंकि इसी दिन मनुष्य को वाणी विद्या का वरदान देने वाली सरस्वती मां का विश्व रचयिता भगवान ब्रह्मा द्वारा प्राकट्य हुआ था | हमें इस ऋतु में अपना स्वास्थ्य बनाना चाहिए सुबह सुबह उठकर घूमने जाना चाहिए और प्रकृति के सौंदर्य का आनंद लेना चाहिए वसंत ऋतु ईश्वर का एक वरदान है और हमें इस अवसर का पूरा लाभ उठाना चाहिए | -अंजलि रावत

मां सरस्वती से हम सब की प्रार्थना

हे हंसवाहिनी ज्ञानदायिनी
अंब विमल मति दे।
अंब विमल मति दे।
जग सिर मोर बनाएं भारत,
वह बल विक्रम दे ।
अंब विमल मति दे।
साहस, शील हृदय में भर दे ,
जीवन त्याग -तपोमय कर दे,
संयम, सत्य स्नेह का वर दे।
स्वाभिमान भर दे,
अम्ब विमल मति दे॥

हे हंसवाहिनी ज्ञानदायिनी
अम्ब विमल मति दे॥
लव, कुश, ध्रुव प्रह्लाद बनें हम,
मानवता का त्रास हरें हम,
सीता, सावित्री, दुर्गा मां,
फिर घर- घर भर दे।
अम्ब विमल मति दे॥

हे हंसवाहिनी ज्ञानदायिनी
अम्ब विमल मति दे।
अम्ब विमल मति दे॥

मानवभारती स्कूल में वसंतोत्सव

मानव भारती स्कूल में हर्षोल्लास के साथ वसंतोत्सव का आयोजन किया गया। प्रधानाचार्य डॉ. गीता शुक्ला ने दीप प्रज्ज्वलित कर उत्सव का शुभारंभ किया। कक्षा दस की छात्राओं हर्षिता, मेघा, तनुश्री ने मां सरस्वती की वंदना प्रस्तुत की।

छात्रा श्रुति ने वसंत पंचमी का महत्व बताया। हिंदी अध्यापिका बबिता गुप्ता ने वसंत पर काव्य पाठ किया। कक्षा छह के विद्यार्थियों ने मां सरस्वती की वंदना करते हुए संपूर्ण विश्व में ज्ञान की ज्योति प्रज्ज्वलित करने की प्रार्थना की।

संस्कृत शिक्षक डॉ. अनन्तमणि त्रिवेदी के साथ बच्चों ने हे शारदे मां... सरस्वती वन्दना का गान किया। प्रधानाचार्य डॉ. गीता शुक्ला ने सभी को वसंत पंचमी तथा सरस्वती पूजा पर शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर कक्षा छह के छात्र-छात्राओं प्राची पंवार अनिरुद्ध रमोला,अंशुल ध्यानी, श्रेया लिंगवाल,शुभ सिंघल, आलोक शेखर भट्ट ने मां सरस्वती के पूजन तथा वसंत ऋतु पर विचार व्यक्त किए।

भारत वन्दना

रत्नाकरा धौतपदां हिमालय किरीटिनीम् ।
ब्रह्मराजर्षि रत्नाढ्यां वन्दे भारतमातरम् ॥

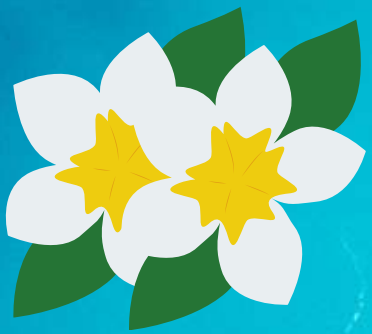

आत्मानं विद्धि

Manava Bharati India International School
D- Block, Nehru Colony, Dehradun 248001 Uttarakhand
E-mail.com:- hr@mbs.ac.in, Website:- www.mbs.ac.in
Phone- 0135-2669306, 8171465265, 7351351098 (Dr. Anantmani Trivedi)

मानव भारती स्कूल देहरादून के लिए प्रसारित। केवल निजी प्रसार के लिए।
संपादक - डॉ. अनन्तमणि त्रिवेदी , डिजाइन- विशाल लोधा